उत्तर-औद्योगिक समाज एवं संस्कृति : विमर्श के आयाम

(विमर्श)

संपादक

हेमन्त कुमार झा

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-91925-08-6

उत्तर-औद्योगिक समाज एवं संस्कृति : विमर्श के आयाम

© हेमन्त कुमार झा

पहला संस्करण (सजिल्द) : 2021

मूल्य : 475.00 रुपए

प्रकाशक

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II

ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

फ़ोन : +91-9871856053

ई-मेल : antika56@gmail.com

वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : विनय अंबर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

UTTER-OUDHYOGIK SAMAJ EVEM SANSKRITI : VIMARSH KE AAYAM (Discourse) by Hemant Kumar Jha

Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II Ghaziabad-201005 (UP) India

Price : ₹ 475.00

उत्तर-औद्योगिक समाज में स्त्रियों की बदलती भूमिका

डॉ. संगीता मौर्य

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजकीय महिला कॉलेज, गाजीपुर (उ.प्र.)

स्त्री से मिलकर परिवार बनता है, परिवार से घर बनता है, घर से समाज और समाज से ही देश बनता है। इसका सीधा अर्थ यही होता है कि स्त्री प्रत्येक समाज की अभिन्न स्तम्भ है। ब्रिघम यंग के अनुसार अगर कोई पुरुष शिक्षित होता है तो वह सिर्फ अपना विकास कर पायेगा, वहीं अगर कोई स्त्री शिक्षा हासिल करती है तो वह अपने साथ-साथ पूरे समाज को बदलने की ताकत रखती है। स्त्री के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

भारत की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व स्त्रियाँ करती हैं। भीमराव अम्बेडकर ने भी समाज की प्रगति को महिलाओं के विकास से जोड़कर देखा है। यह महज एक दुर्भाग्यपूर्ण तर्क है कि स्त्रियों की क्षमता पुरुषों से कम है। यदि पितृसत्ता पर आधारित परम्परागत भारतीय समाज की बात करें तो अमरकांत की 'दोपहर का भोजन' कहानी की बरबस ही याद आ जाती है जिसमें एक स्त्री पूरे परिवार को खाना खिलाने के बाद उसी एक बची हुई रोटी से अपना काम चला लेती है। कहने का तात्पर्य यह है कि दिन-रात काम करने वाली वह स्त्री सम्पूर्ण परिवार का तो पेट भरती है लेकिन खुद भूखे पेट ही सो जाती है। भारतीय समाज का यह स्वरूप स्त्री के त्याग और बलिदान को अपनी गौरवशाली परंपरा समझता है, लेकिन उस परंपरा में स्त्री हमेशा अपनी पहचान के संकट से जूझती रही है। जो लोग इस इतिहास को नहीं जानते वे सामाजिक विकास के प्रश्नों से अनभिज्ञ हैं।

स्त्री के अस्तित्व के दृश्यमान हो उठने के पीछे विश्व स्तर पर उस उत्तर-औद्योगिक यथार्थ का योगदान है जो औद्योगिक सभ्यता और युग के स्थापित जीवन मूल्यों को बदल रहा है। स्त्री का प्रश्न इस अर्थ में एक उत्तर आधुनिक प्रश्न है, इस बात को समझने के लिए हमें नए स्त्री-विमर्श से दो-चार होना होगा। उत्तर-

पर सार्थक प्रश्न उठाने वाले विविध स्त्री-आंदोलनों ने आज एक सम्यक अध्ययन की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित किया है। एकात्मकता पर आधारित भारतीय समाज को एक बहुआयामी दृष्टिकोण प्रदान किया है। पैतृक संपत्ति में स्त्री को अधिकार, समान कार्य के लिए समान वेतन, प्रसूति का अवकाश, अवसर की समानता, दहेज निरोधक अधिनियम, घरेलू हिंसा पर रोक, समान स्वास्थ्य एवं शिक्षा का अधिकार, भोजन का अधिकार, सम्मान पूर्वक जीवन जीने का अधिकार, प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ती स्त्रियों की भागीदारी उनकी प्रतिभा और क्षमता को दर्शा रही है। रियो डी जेनेरियो में 2016 में आयोजित ओलम्पिक खेलों में भारतीय महिलाओं का पदक जीतना पुरुषों से कदमताल मिलाकर चलना है। यहाँ डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा को समझने का प्रयास करना होगा कि उन्होंने स्त्रियों के लिए दलित-दृष्टि के साथ सम्यक दृष्टि अपनायी थी। वे स्त्रियों को विकास का पैमाना मानते थे। आज जरूरत इस बात की है कि हमें स्त्रियों को पुरुषों के समान ही एक-दूसरे के पूरक के रूप में देखना होगा। उनके प्रति अपनी संकीर्ण मानसिकता को बदलते हुए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनको वाजिब सम्मान देना होगा। स्त्रियों को एक प्रतिस्पर्धी या दोयम दर्जे का न समझ प्रत्येक क्षेत्र में उनकी उचित भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी।

संदर्भ :

1. उत्तर-यथार्थवाद-सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. स्त्री विमर्श की उत्तर-गाथा-अनामिका, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
3. स्त्री : उपेक्षिता-अनुवाद (द सेकंड सेक्स)-डॉ. प्रभा खेतान, हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली
4. शृंखला की कड़ियाँ-महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. स्त्री विमर्श : इससे दयनीय कोई दूसरा विमर्श नहीं है हिंदी में: वीर भारत तलवार
6. नारीवाद के मायने-किंगसन पटेल (www.debateonline.in)
7. अन्यथा, संपादक-कृष्ण किशोर, जून-2008